विचार बिन्दु

जैसे सूर्योदय के होते ही अंधकार दूर हो जाता है वैसे ही मन की प्रसन्नता से सारी बाधाएँ शांत हो जाती हैं। –अमृतलाल नागर

जलवायु परिवर्तन से बदलता मानसून का पैटर्न: नई चुनौती

इस साल के मानसून के विदा होने का समय आ गया है। भारत में दक्षिण-पश्चिम मानसून जून से सितंबर तक सक्रिय रहता है। सामान्य स्थिति में यह चार महीने लगभग समान रूप से वर्षा प्रदान करता है, परंतु अब इसमें विविध प्रकार के बदलाव देखने को मिल रहे हैं। राजस्थान, जिसका बड़ा भाग शुष्क है, वहां इस साल हमने भारी बारिश के दौर देखे हैं। दूसरी तरफ देश के उन प्रदेशों में जहां मानसून हमेशा खूब मेहरबान रहता है कम बरसात दर्ज हुई है। इसके अलावा पिछले वर्षों से हम देख रहे हैं कि औसत वर्षा लगभग समान रहने के बावजूद इसका वितरण असमान हो गया है। कुछ सप्ताहों में अत्यधिक वर्षा होती है, जबकि अन्य समय पूर्ण शुष्क रहता है। मानसून के आगमन और वापसी का समय भी अब निश्चित नहीं रहा। कभी यह देर से आता है, कभी जल्दी लौट जाता है। उत्तर भारत के अनेक पहाड़ी हिस्सों में अत्यधिक वर्षा की घटनाएं बढ़ गई हैं। वहां छोटे अंतराल में रिकॉर्ड-तोड़ वर्षा (क्लाउडबर्स्ट, फ्लैश फ्लड्स) के हादसे बढ़ गये हैं। मौसम विज्ञानी भी मानते हैं कि वर्षा के पैटर्न बदल रहे हैं। यह बदलाव भारत में ही नहीं, दुनिया भर में देखे जा रहे हैं।

मानव सभ्यता के विकास में जलवायु ने सदैव एक निर्णायक भूमिका निभाई है। आज जब हम मानसून के बदलते पैटर्न, असमान वर्षा, सूखा और बाढ़ जैसी स्थितियों का सामना कर रहे हैं तो अक्सर इसका कारण मानवजनित जलवायु परिवर्तन माना जाता है। किंतु यदि हम पृथ्वी के दीर्घ इतिहास और प्राकृतिक चक्रों का अध्ययन करें तो यह स्पष्ट होता है कि जलवायु परिवर्तन केवल मानव गतिविधियों का परिणाम नहीं है, बल्कि यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया भी है। भूगर्भीय साक्ष्यों के अनुसार, पृथ्वी ने बार-बार जलवायु में बड़े परिवर्तन देखे हैं। हिमयुग और मध्यकालीन ऊष्मा काल जैसे उदाहरण यह सिद्ध करते हैं कि कभी अत्यधिक ठंड और कभी असामान्य गर्मी स्वाभाविक रूप से आती रही है। उस समय न तो उद्योग थे और न ही कार्बन उत्सर्जन की अधिकता, फिर भी जलवायु में व्यापक बदलाव हुए। वैज्ञानिक बताते हैं कि सूर्य की किरणों की तीव्रता और सौर धब्बों का चक्र भी जलवायु पर गहरा प्रभाव डालता है। वैज्ञानिक शोध बताते हैं कि जब सूर्य की गतिविधि बढ़ती है तो पृथ्वी पर तापमान अधिक होता है और जब यह घटती है तो ठंडक बढ़ जाती है। इसलिये मानसून के उतार-चढ़ाव को भी सूर्य के चक्रों से जोड़ा गया है। यह भी सबको विदित है कि प्रशांत महासागर में होने वाली एल-नीनो और ला-नीना जैसी घटनाएं मानसून को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। एल नीनो के वर्षों में मानसून कमजोर पड़ता है, जबकि ला-नीना से अधिक वर्षा होती है। इनका प्रभाव पूरी तरह प्राकृतिक है और हजारों वर्षों से चलता आ रहा है। ज्वालामुखी विस्फोटों से वातावरण में धूलकण और गैसें फैलती हैं, जिससे वर्षों तक तापमान और वर्षा चक्र प्रभावित रहते हैं। हिमालय जैसे पर्वतों की ऊँचाई और टेक्टोनिक गतिविधियाँ भी मानसून की दिशा और ताकत को बदल सकती हैं। यह सब प्राकृतिक कारक हैं। भारतीय कृषक परंपरा और पंचांग शास्त्र मानसून की भविष्यवाणी खगोलीय घटनाओं और प्राकृतिक संकेतों से करता आया है। यह दर्शाता है कि जलवायु परिवर्तन और मानसून के पैटर्न में बदलाव नई बात नहीं है, बल्कि प्राचीन काल से समाज इसका अनुभव करता रहा है। लेकिन हमें यह भी नहीं भूल जाना चाहिए कि वर्तमान में औद्योगिकीकरण और प्रदूषण ने पर्यावरणीय संकट को और गहरा बना दिया है और यह कहना गलत नहीं होगा कि मानवजनित कारणों ने जलवायु परिवर्तन को गति दी है। जलवायु परिवर्तन की तेज गति का मुख्य कारण मानवजनित ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के कारण ग्लोबल वार्मिंग भी शामिल है।

वर्तमान में जो बड़ी समस्या खड़ी हुई है वह है यह है कि वर्षा सब जगह समय पर समान रूप सेहोने के बजाय, कम समय में, अधिक तीव्र रूप से हो रही है। इससे आंकड़ों में किसी क्षेत्र का सालाना औसत तो हो जाता है किन्तु वह कृषि के काम का नहीं होता। इससे कुछ क्षेत्रों में बाढ़ और अन्य क्षेत्रों में सूखा पड़ने के हालात भी बनते हैं। दक्षिण एशिया में मानसून का देर से आना या जल्दी लौट जाना इस परिवर्तन का परिणाम है। बादल फटने, चक्रवात और बेमौसम बारिश की अधिकता भी सामने आ रही है। भारी वर्षा के कारण शहरी क्षेत्रों में बाढ़ जैसे हालात बन जाते हैं। ऐसा राजस्थान के अनेक हिस्सों में इस मानसून में स्पष्ट देखा गया। मौसमी वर्षा में बदलाव के आंकड़े बताते हैं कि कम दिनों में अधिक वर्षा से पानी बह जाता है और भूजल पुनर्भरण कम हो जाता है। हमारी सबसे बड़ी समस्या मौसमी बदलाव के कारण बुवाई और कटाई के चक्र में आ रहे परिवर्तन की हैं जिसका कृषि पर भारी प्रभाव पड़ रहा है। क्योंकि भारत में कृषि अब भी देश की 47 प्रतिशत आबादी के बोझ को उठाये हुए है इसलिए बहुसंख्या में लोगों के जीवन पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। सारे अध्ययन बताते हैं कि वर्षा के बदलते स्वरूप का कृषि, जल संसाधनों और अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण और अक्सर हानिकारक प्रभाव पड़ रहा है, खासकर भारत जैसे देशों में जो मानसून पर बहुत अधिक निर्भर हैं। भारतीय कृषि का 60 प्रतिशत भाग वर्षा पर निर्भर है जो सिंचित नहीं है। फसलें मौसमी होती हैं और समय पर होने वाली वर्षा पर निर्भर करती हैं। मानसून के देर से या जल्दी आना तथा एक मौसम में सूखा और अगले मौसम में बाढ़ जैसी स्थितियों का किसानों को सामना करना पड़ता है। भारी वर्षा से खड़ी फसलों को नुकसान होने से उपज में कमी होती है। राजस्थान और पंजाब के किसानों को इस साल इस प्राकृतिक आपदा का सबसे अधिक सामना करना पड़ा है। भारी वर्षा के कारण मृदा का क्षरण होता है तथा अनियमित मौसम में कीटों का प्रकोप बढ़ जाता है। जैसे 2023 में, मध्य प्रदेश के किसानों को अत्यधिक वर्षा के कारण सोयाबीन का नुकसान हुआ वहीं पंजाब और हरियाणा में बेमौसम प्री-मानसून वर्षा के कारण गेहूँ का नुकसान हुआ। वर्षा के तीव्र लेकिन अल्पकालिक होने से भूजल पुनर्भरण में कमी आती है। वर्षा का पानी बह कर चले जाने से अवशोषण में कमी आती है। सूखे की स्थिति पेयजल और सिंचाई को प्रभावित करती है। शुष्क मौसम में जल की कमी और परिणामस्वरूप भूगर्भ जन का अतिरिक्त दोहन के कारण नई समस्याएं पैदा हो रही हैं। खराब जल निकासी और तीव्र वर्षा के कारण शहरी बाढ़ की घटनाएं बढ़ रही हैं। चेन्नई को 2021 में बाढ़ और 2019 में जल संकट का सामना करना पड़ा - दोनों ही अनियमित वर्षा के कारण हुए।

मानसून के व्यवहार में बदलाव का अर्थव्यवस्था पर भी प्रभाव पड़ता है। क्योंकि कृषि भारत की 47 प्रतिशत आबादी को रोजगार देती है इसलिये वर्षा के बदले हालात सीधे किसानों की आय को प्रभावित करते हैं। फसलों के खराब होने से खाद्यपदार्थों की कीमतें बढ़ती हैं। किसानों को फसलों के नुकसान के लिए मुआवजे की व्यवस्था करने से राजकोष पर दबाव बढ़ जाता है तथा जीडीपी में उतार-चढ़ाव आता है।

मानसून की व्यवहार में बदलाव का अर्थव्यवस्था पर भी प्रभाव पड़ता है। क्योंकि कृषि भारत की 47 प्रतिशत आबादी को रोजगार देती है इसलिये वर्षा के बदले हालात सीधे किसानों की आय को प्रभावित करते हैं। फसलों के खराब होने से खाद्यपदार्थों की कीमतें बढ़ती हैं। किसानों को फसलों के नुकसान के लिए मुआवजे की व्यवस्था करने से राजकोष पर दबाव बढ़ जाता है तथा जीडीपी में उतार-चढ़ाव आता है। खराब मानसून ग्रामीण इलाकों में मांग और विकास की गति को कम करता है। ग्रामीण भारत में रोज़गार में गिरावट, शहरों की ओर पलायन होता है। कृषि और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्र होते हैं। चावल और कपास जैसी जिंसों के निर्यात बाज़ार पर असर पड़ता है। खराब मानसून के कारण जीडीपी वृद्धि में गिरावट, खाद्य मुद्रास्फीति और ग्रामीण संकट में वृद्धि होती हम पिछले समय में देख चुके हैं।

मौसम वैज्ञानिक कहते हैं कि तापमान और आर्द्रता में परिवर्तन आ रहे हैं। समुद्र सतह और स्थल दोनों के तापमान में वृद्धि ने मानसूनी धाराओं को अधिक अस्थिर बना दिया है। इन परिवर्तनों के पीछे के कारण जानने के लिए विश्व भर में वैज्ञानिक अध्ययन कर रहे हैं। वे कहते हैं कि समुद्रों के गर्म होने से हवा में नमी बढ़ जाती है, जिससे भारी बारिश होती है। वैश्विक ताप वृद्धि दर्ज हो रही है। पृथ्वी के तापमान में वृद्धि से समुद्र सतह अधिक गर्म हो रहा है, जिससे मानसूनी हवाओं का दबाव-तंत्र असंतुलित हो जाता है। जलवायु मॉडल संकेत करते हैं कि मानवजनित ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन के कारण भी मानसून की तीव्रता और वितरण प्रभावित हो रहे हैं। एरोसोल और प्रदूषण भी इसके जिम्मेदार बताए जाते हैं। औद्योगिक इकाइयों और वाहनों से उत्सर्जित कण वातावरण में जाकर बादलों के निर्माण और वर्षा प्रक्रिया को बदल देते हैं। वनों की कटाई और भूमि उपयोग में बदलाव - बड़े पैमाने पर वनों का नष्ट होना और शहरीकरण ने प्राकृतिक जल चक्र को बाधित किया है। आवश्यकता इस बात की है कि जलवायु परिवर्तन को केवल समस्या के रूप में देखने के बजाय इसके चक्र को समझना चाहिए और मानव को उसके अनुरूप अपने को ढालने के उपाय करने चाहिए। इन उपायों में उन मानवजनित कारकों को दूर करना शामिल हैं जो इन परिवर्तनों की गति को बढ़ाते हैं। वैज्ञानिक समझ बताती है कि स्थानीय कारक, जैसे पहाड़ों की व्यावसायिक कटाई, वनों का सफाया और नदियों का अवरुद्ध होना आदि भी वर्षा के पैटर्न में हस्तक्षेप करते हैं पर अंकुश लगाना जरूरी है। अंधाधुंध अनियोजित शहरीकरण भी आग में घी का काम कर रहा है। जैव विविधता पर भी असर पड़ रहा है। इसलिए मानवीय हस्तक्षेप को अनुशासित करने पर नीति निर्माताओं को ध्यान देना होगा।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी : राष्ट्र निर्माण के पथ प्रदर्शक

75वें जन्मदिवस पर राष्ट्रनायक को नमन

भारत के वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी का जीवन संघर्ष, आत्मविश्वास, दूरदृष्टि और राष्ट्रसेवा का अद्भुत उदाहरण है। 17 सितम्बर 1950 को गुजरात के वडनगर के एक साधारण परिवार में जन्मे नरेन्द्र मोदी ने अपने जीवन की शुरुआत संघर्षों से की थी। साधारण पृष्ठभूमि से उठकर विश्व की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक व्यवस्था के शीर्ष पद तक पहुँचना उनकी असाधारण प्रतिभा और मेहनत का परिणाम है। 17 सितम्बर 2025 को भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी 75 वर्ष के हो रहे हैं। यह केवल किसी नेता का जन्मदिन नहीं है, बल्कि आधुनिक भारत की उस यात्रा का प्रतीक है जिसमें साधारण पृष्ठभूमि से उठकर एक व्यक्ति राष्ट्र के परिवर्तन का सूत्रधार बनता है। नरेन्द्र मोदी का जीवन संघर्ष, कर्मठता, राष्ट्रभावना और दूरदृष्टि का अद्भुत संगम है। यह अवसर केवल एक व्यक्ति के जन्मदिवस का नहीं बल्कि भारत के आत्मविश्वास, विकास और परिवर्तन की गाथा का भी उत्सव है।

संघर्षों से शिखर तक :- नरेन्द्र मोदी का बचपन कठिनाइयों और अभावों में बीता। उनके पिता रेलवे स्टेशन पर चाय बेचते थे, और नरेन्द्र मोदी स्वयं भी किशोरावस्था में इस कार्य में सहयोग करते थे। लेकिन यह कठिनाइयाँ उनके मनोबल को तोड़ने के बजाय निखारने का कारण बनीं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़कर उन्होंने अनुशासन, संगठन और सेवा की संस्कृति सीखी। यह प्रशिक्षण उनके राजनीतिक जीवन में भी दिखता है चाहे संगठन को मजबूत करने की बात हो या जनता से सीधा संवाद बनाने की। बचपन में अभावग्रस्त परिस्थितियों में रहते हुए भी नरेन्द्र मोदी ने स्वयं को शिक्षा और अनुशासन से तराशा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में उन्होंने संगठनात्मक क्षमता विकसित की। इसके बाद उन्होंने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के संगठन में कार्य कर अपनी एक अलग ही पहचान बनाई।

गुजरात मॉडल : एक राज्य से राष्ट्र तक :-भाजपा संगठन में कार्य करते हुए नरेन्द्र मोदी 2001 में गुजरात के मुख्यमंत्री बने। 13 वर्षों तक उन्होंने गुजरात को विकास की नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। गुजरात के मुख्यमंत्री (2001-2014) की इस अवधि में उन्होंने गुजरात को औद्योगिक, कृषि और आधारभूत संरचना के क्षेत्र में अग्रणी राज्य बनाया। औद्योगिक निवेश के लिए 'वाइब्रेंट गुजरात' सम्मेलनों की शुरुआत की। आधारभूत ढाँचे और बिजली क्षेत्र में गुजरात को देश में अग्रणी बनाया। नर्मदा जल को कच्छ जैसे सूखे इलाकों तक पहुँचाकर कृषि में नई क्रांति लाए। गुजरात का उनका यह विकास मॉडल उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय और विश्वसनीय बनाता गया।

2014 : एक नए युग की शुरुआत :-2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को पूर्ण बहुमत मिला और नरेन्द्र मोदी देश के प्रधानमंत्री बने। 2014 में प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के बाद उन्होंने 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' का मंत्र दिया, जिसने शासन को केवल घोषणाओं से निकालकर परिणामों तक पहुँचाने की दिशा दी। 2019 में उन्होंने और भी बड़े बहुमत से चुनाव जीतकर यह साबित किया कि जनता उनके नेतृत्व और कामकाज पर भरोसा करती है। 2024 के चुनावों में वे लगातार तीसरी बार भारत के प्रधानमंत्री बने और स्वतन्त्र भारत में लगातार निर्वाचित प्रधानमन्त्री बनने का एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। उन्होंने आर्थिक क्षेत्र में मेक इन इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया, जीएसटी, मुद्रा योजना जैसे कार्यक्रमों की शुरुआत कराई और सामाजिक क्षेत्र में स्वच्छ भारत मिशन, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत, जनधन खाते जैसी योजनाओं को लागू कराया। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए मोदी जी भारतीय सेनाओं का मनोबल बढ़ा कर सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक तथा ऑपरेशन सिन्दूर से आतंकवाद के प्रति सख़्त नीति को अपना पूरे विश्व में एक सन्देश दिया।

उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की साख को नए आयाम दिए तथा जी-20 की सफल अध्यक्षता, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक दक्षिण की आवाज़ के रूप में भारत की भूमिका को विश्व मंच पर उभारा।

प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी की प्रमुख पहलें

1. आर्थिक क्षेत्र

मेक इन इंडिया : घरेलू निर्माण और रोजगार को बढ़ावा।

स्टार्टअप इंडिया : युवाओं को नवाचार और उद्यमिता के अवसर।

डिजिटल इंडिया : डिजिटल भुगतान, आधार आधारित सेवाएँ और ग्रामीण इलाकों तक इंटरनेट पहुँच।

जीएसटी : पूरे देश में एक समान कर प्रणाली लागू कर व्यापार को सरल बनाना।

2. सामाजिक क्षेत्र

स्वच्छ भारत मिशन : खुले में शौच से मुक्ति और स्वच्छता को जनआंदोलन बनाना।

उज्ज्वला योजना : गरीब महिलाओं को मुफ्त रसोई गैस कनेक्शन।

जनधन योजना : करोड़ों लोगों के बैंक खाते खोलकर वित्तीय समावेशन।

आयुष्मान भारत : गरीब और मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए स्वास्थ्य बीमा।

3. आधारभूत ढाँचा और आधुनिक भारत

हाईवे, रेल, मेट्रो, बंदरगाह और हवाईअड्डों का तेजी से विस्तार।

नवीकरणीय ऊर्जा और हरित हाइड्रोजन पर जोर।

गगनयान मिशन और चंद्रयान जैसे अंतरिक्ष अभियानों से भारत को अंतरिक्ष महाशक्ति की ओर ले जाना।

4. राष्ट्रीय सुरक्षा

सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक और ऑपरेशन सिन्दूर के माध्यम से आतंकवाद के खिलाफ सख्त रुख।

सीमा ढाँचे को मजबूत करना और आत्मनिर्भर रक्षा उत्पादन।

5. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की साख

संयुक्त राष्ट्र, जी-20, ब्रिक्स जैसे मंचों पर भारत की मजबूत उपस्थिति।

वैश्विक दक्षिण की आवाज़ बनने और जलवायु परिवर्तन, डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे मुद्दों पर भारत का नेतृत्व।

प्रवासी भारतीयों के साथ अभूतपूर्व संवाद और भारतीय संस्कृति को सम्मान दिलाना।

'विकसित भारत-2047 का खाका' : नरेन्द्र मोदी का 75वाँ जन्मदिन ऐसे समय में आ रहा है जब देश 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य की ओर बढ़ रहा है। उनके नेतृत्व में देश बुनियादी ढाँचे, रक्षा, अंतरिक्ष, डिजिटल तकनीक और महिला सशक्तिकरण जैसे क्षेत्रों में नई ऊँचाइयाँ छू रहा है। वे 2047 तक "विकसित भारत" के लक्ष्य के लिए काम कर रहे हैं। इसके तहत हर नागरिक के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य, 'आत्मनिर्भर भारत' से स्थानीय उत्पादन और रोजगार को बढ़ावा, हर गाँव तक 24 घंटे बिजली, इंटरनेट और आधुनिक सुविधाएँ, महिलाओं की भागीदारी को राजनीति, शिक्षा, रक्षा और विज्ञान सभी क्षेत्रों में बढ़ाना। मोदी जी की यह दृष्टि केवल सरकारी योजनाओं तक सीमित नहीं, बल्कि समाज के हर वर्ग को भागीदार बनाने पर आधारित है। उनकी कार्यशैली ने राजनीति में विकास और परिणाम आधारित संस्कृति को गहराई दी है।

प्रेरणा का स्त्रोत : नरेन्द्र मोदी का जीवन संदेश देता है कि कोई भी व्यक्ति यदि ईमानदारी, परिश्रम और राष्ट्रभावना से काम करे तो वह असंभव को संभव बना सकता है। वे आज केवल राजनेता नहीं बल्कि एक विचार, एक दृष्टि और नए भारत के प्रतीक बन चुके हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 75वें जन्मदिवस पर राष्ट्र उन्हें केवल शुभकामनाएँ ही नहीं देता बल्कि उनके नेतृत्व में विकसित भारत के सपने को साकार करने का संकल्प भी दोहराता है। उनका जीवन भारत के हर युवा को यह प्रेरणा देता है कि साधारण पृष्ठभूमि से भी असाधारण ऊँचाइयाँ हासिल की जा सकती हैं। नरेन्द्र मोदी का 75वाँ जन्मदिवस केवल जन्मोत्सव नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की सतत प्रक्रिया का प्रेरणादायी पड़ाव है। प्रधानमंत्री मोदी का 75वाँ जन्मदिन केवल उनका व्यक्तिगत उत्सव नहीं, बल्कि देश के सामूहिक आत्मविश्वास और ऊर्जा का उत्सव है। उनके नेतृत्व में भारत ने कोविड-19 जैसे संकटों से निपटा, वैक्सीन निर्माण और वितरण में विश्व का नेतृत्व किया और बड़े पैमाने पर डिजिटल भुगतान के क्षेत्र में अग्रणी बनकर दिखाया।

नरेन्द्र मोदी की दिनचर्या, कार्यशैली और संवाद कौशल उन्हें विश्व के किसी भी नेता से अलग बनाते हैं। वह सोशल मीडिया और तकनीक का प्रयोग करके लोगों से सीधे जुड़ते हैं और छोटे-से-छोटे कार्यकर्ताओं को भी महत्व देते हैं।

यह जन्मदिन हमें याद दिलाता है कि राष्ट्रनिर्माण की प्रक्रिया सतत चलने वाली है और प्रत्येक नागरिक को इसमें योगदान देना होगा। नरेन्द्र मोदी के जन्मदिवस पर राष्ट्र उन्हें शुभकामनाएँ देते हुए यह संकल्प दोहराता है कि उनके नेतृत्व में विकसित भारत का सपना साकार होगा। उनका जीवन संघर्ष, संकल्प और सफलता का जीवंत उदाहरण है। वह केवल प्रधानमंत्री नहीं, बल्कि एक विचारधारा, एक दृष्टि और करोड़ों भारतीयों के आत्मविश्वास के प्रतीक है। उनका जन्मदिवस इस बात का प्रमाण है कि भारत का भविष्य उज्ज्वल है और वह दुनिया के मंच पर नई ऊँचाइयाँ छूने को तैयार है। इस प्रकार नरेन्द्र मोदी का 75वाँ जन्मदिवस एक व्यक्ति के सम्मान का नहीं, बल्कि राष्ट्र की नई चेतना, नई दिशा और नए संकल्प का उत्सव है।

वासुदेव देवनानी
अध्यक्ष, राजस्थान विधानसभा।

शहरी सेवा शिविर-2025 : एक मंच पर आमजन की समस्याओं का समाधान होगा

धर्मिता चौधरी।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राजस्थान प्रगति के पथ पर निरन्तर बढ़ रहा है। आपणो अग्रणी राजस्थान की संकल्पना साकार हो रही है। राजस्थान सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाएं, अभियान आमजन के चेहरे पर मुस्कुराहट ला रहे हैं। अब 'शहरी सेवा शिविर - 2025' के तहत आमजन की समस्याओं का मौके पर ही निस्तारण होगा तो यह मुस्कुराहट ओर भी बढ़ जाएगी। 17 सितम्बर से 17 अक्टूबर तक चलाए जाने वाले शहरी सेवा शिविर के तहत आमजन को सुगम ओर त्वरित राहत देने के लिये वार्डवार शिविर लगाकर राहत प्रदान की जाएगी।

ये शिविर शहरी निकायों से जुड़ी आमजन की समस्याओं का एक ही छत के नीचे समाधान करने एवं शहर को सुव्यवस्थित, स्वच्छ, सुंदर बनाने में अग्रणी भूमिका निभाएंगे। जहाँ समस्या निस्तारण से आमजन के चेहरे पर मुस्कुराहट होगी, वहीं शहर भी स्वच्छता अभियान से स्वच्छ-सुंदर होकर निखरते-बदलते स्वरूप में होंगे। इन शिविरों की सबसे बड़ी बात यह है कि यह दो चरणों में आयोजित हो रहे हैं। तैयारी शिविर के तहत आमजन की समस्याओं की चिन्हीकरण किया गया।

4 सितम्बर से 13 सितम्बर तक वार्डवार प्री-कैम्प लगाये गए। आमजन की समस्याओं को सुना गया, समझा गया, चिह्नीकरण किया गया। जिन समस्याओं का मौके पर ही समाधान हो सकता है, उनका मौके पर ही समाधान किया गया। जब जन्म प्रमाण पत्र, विवाह प्रमाण पत्र आवेदन करने के मात्र 10-15 मिनट में बन जाए और वर्तमान में सबसे कीमती चीज 'समय' की बचत हो, जिस काम के लिए शिविर में आए और वो काम शीघ्र पूर्ण हो जाए तो जनमानस के चेहरे पर चमक आ जाती है और वह सरकार को धन्यवाद देता है। इन शिविरों का समय भी प्रातः 9:30 बजे से 6 बजे किया गया ताकि अधिक से अधिक लोग इसका लाभ उठा सके।

■ 17 सितम्बर से 17 अक्टूबर तक चलाए जायेंगे शहरी सेवा शिविर

नगर निगम ग्रेटर के जोन कार्यालयों पर लगे वार्डवार प्री-कैम्पों में भागचंद, बाबूलाल, डॉली, रमेश जैसे लाभार्थियों की एक लंबी है, जिनका कार्य इन शिविरों में हुआ और जिन्होंने भजनलाल सरकार को धन्यवाद दिया। इससे यह स्पष्ट होता है कि शहरी सेवा शिविर जनता तक राहत पहुँचाने का सशक्त माध्यम बन चुका है।

अभियान के तहत सफाई व्यवस्था सुधारना, टूटे फेरोकवर व क्रॉस सही करवाना, ब्लैक स्पॉट खत्म करना, स्ट्रीट लाइट लगवाना, सड़कों की मरम्मत, सीवरेज कनेक्शन व मरम्मत, निराश्रित पशुओं को पकड़ना, पार्क, सामुदायिक केंद्रों का रखरखाव, कार्यालय में पेन्डिंग पत्रावलियों का निस्तारण, विभिन्न प्रकार के पट्टे (स्टेट ग्राण्ट, कच्ची बस्ती 69ए, कृषि भूमि) भू-उपयोग परिवर्तन, खांचा भूमि, लीज़ मुक्ति प्रमाण पत्र, सामाजिक सुरक्षा पेंशन, जनहित योजनाओं के आवेदन लेना, जन्म-मृत्यु एवं विवाह प्रमाण पत्र जारी करना, मुख्यमंत्री स्व-निधि योजना, पीएम स्ट्रीट वेण्डर्स आत्मनिर्भर निधि (पीएम स्वनिधि) योजना, स्वनिधि से समृद्धि, प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी 2.0, प्रधानमंत्री स्व-निधि योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आवेदन, एसबीएम 2.0 के अन्तर्गत घरेलू शौचालय निर्माण हेतु आवेदन, फायर एनओसी, ट्रेड लाइसेंस जैसे कार्य किये जाएंगे।

आमजन को सेवाएं प्रदत्त करने वाले विभाग जैसे सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता, जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी, ऊर्जा , सार्वजनिक निर्माण, राजस्व, महिला एवं बाल विकास, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, आयोजना जैसे विभागों द्वारा भी आमजन को सेवाऐं प्रदत्त की जाएगी एवं जनसमस्याओं का मौके पर ही निस्तारण किया जायेगा। इसके साथ ही राज्य सरकार की फ्लैगशिप योजनाओं की जानकारी शिविर में दी जाएगी। मौके पर ही मुख्यमंत्री स्वनिधि योजना के तहत भी आवेदन किया जा सकता है। शहरी सेवा शिविर निश्चित रूप से शहरी नागरिकों की कठिनाईयों का निवारण कर जन समस्याओं का समाधान करेंगे, साथ ही शहर भी स्वच्छ और सुंदर होंगे और एक बार फिर आमजन भजनलाल सरकार को चेहरे पर खिली मुस्कुराहट के साथ धन्यवाद देगा।

धर्मिता चौधरी, पीआरओ,
ग्रेटर नगर निगम, जयपुर

जोजरी नदी को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने संज्ञान लिया

जोधपुर, (कासं)। सुप्रीम कोर्ट ने जोधपुर की जोजरी नदी में फैक्ट्रियों के केमिकल युक्त जहरीले पानी से पनपे भयावह हालात पर स्वतः संज्ञान लिया है। जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की बेंच ने मंगलवार को इस मामले पर सुनवाई करते हुए चिंता जताई। कोर्ट ने कहा कि नदी में फैक्ट्रियों से निकलने वाला प्रदूषित पानी और कचरा डाला जा रहा है। इससे अनगिनत गांव प्रभावित हैं। इन गांवों में पीने योग्य पानी भी नहीं बचा है। बेंच ने स्वप्रेरित संज्ञान केस दर्ज कराने का आदेश दिया है। इस मामले को लेकर चीफ जस्टिस के सामने उपयुक्त आदेश पेश किया जाए। इसके बाद चीफ जस्टिस तय करेंगे कि कौन सुनवाई करेगा। जोजरी प्रदेश की मौसमी नदी कहलाती है। पिछले कई सालों से जोधपुर, बालोतरा, जालोर, पाली जिलों की फैक्ट्रियों, खासकर टैक्सटाइल और स्टील रीरोलिंग यूनिट्स से प्रदूषित पानी को जोजरी नदी में छोड़ा जा रहा है। नदी के किनारे बसे 50 से ज्यादा गांव और बस्तियां इससे प्रभावित हैं। लूणी और जोजरी नदी के किनारे बसे गांवों में बारिश के बाद हालात और ज्यादा भयावह हो चुके हैं। हर तरफ काले पानी के तालाब दिखाई दे रहे हैं। पशु-पक्षी तालाब का प्रदूषित पानी पीकर अपनी जान गवां रहे हैं। इससे इन इलाकों में जीव-जंतुओं की संख्या भी लगातार कम हो रही है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 17 सितम्बर, 2025

आश्विन मास, कृष्ण पक्ष, एकादशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, पुनर्वसु नक्षत्र प्रातः 6:26 तक, परिघ योग रात्रि 10:25 तक, बव करण दिन 12:01 तक, चन्द्रमा आज कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-कर्क, मंगल-तुला, बुध-कन्या, गुरू-मिथुन, शुक्र-सिंह, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज कुमार योग प्रातः 6:26 तक है। राज रात्रि 11:40 से सूर्योदय तक है। आज इन्दिरा एकादशी व्रत, एकादशी का श्राद्ध, विश्वकर्मा पूजा है। संक्रान्ति पुण्यकाल पूर्वान्ह में है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:14 तक, शुभ 10:50 से 12:21 तक, चर 3:24 से 4:55 तक, लाभ 4:55 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:18, सूर्यास्त 6:23

मेष
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

वृष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। मित्रों/रिश्तेदारों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे।

कर्क
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

सिंह
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

कन्या
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

वृश्चिक
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियों से राहत मिलेगी। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

धनु
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

मकर
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक सम